उपन्यास का वर्तमान

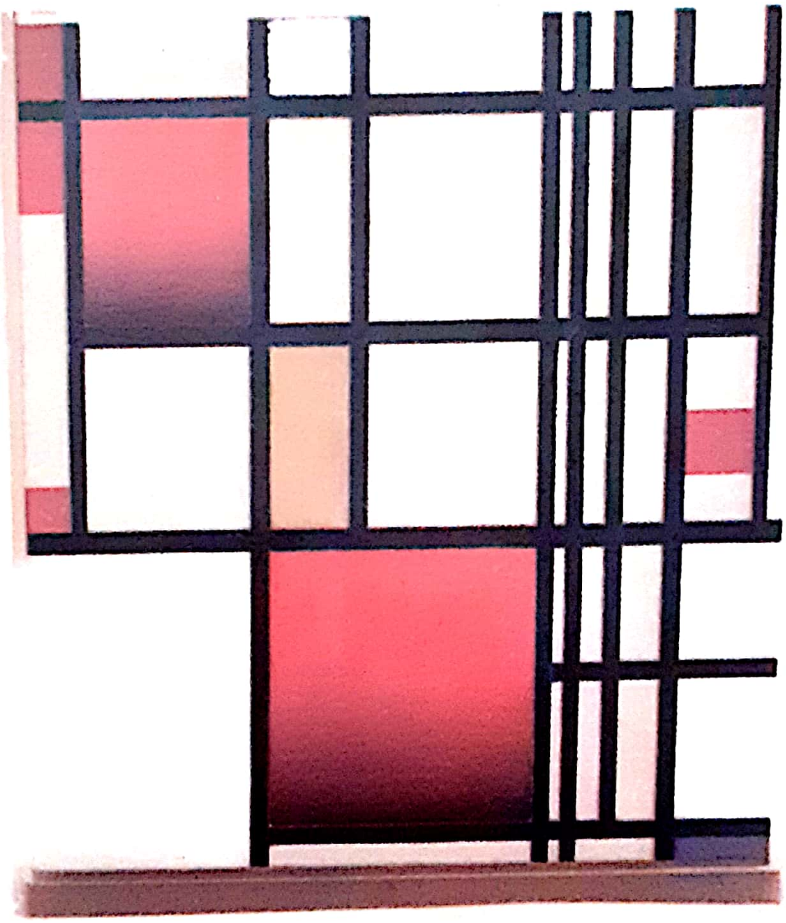

सम्पादक

ओमप्रकाश सिंह

शीतांशु

Scanned by CamScanner

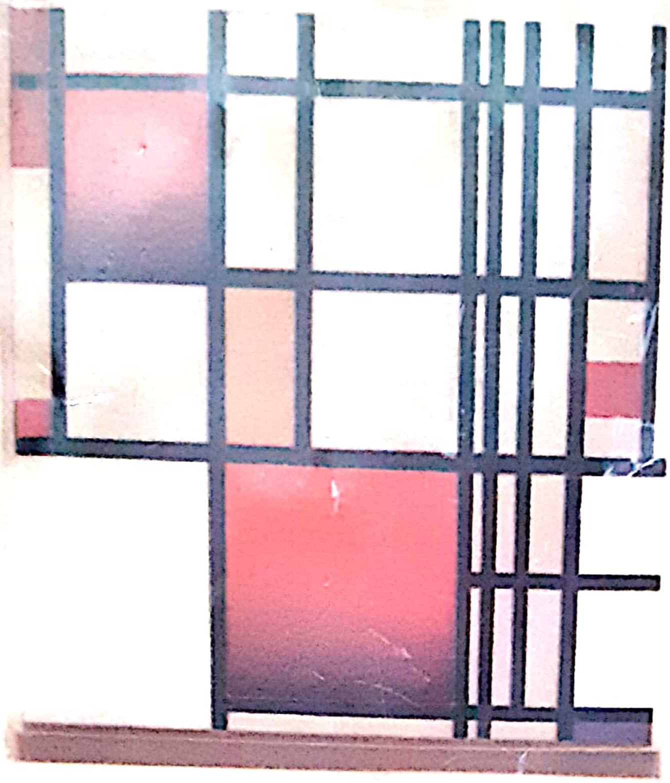

प्रकाशन संस्थान

4268-बी/3 अंसारी रोड दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

फोन नं: 011-23253234, 43549101, 011-23287713

e-mail : prakashansansthan@gmail.com

ISBN : 978-81-7714-607-3

मूल्य : 700.00 रुपये

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

उपन्यास और हमारा समय *vii*
'उपन्यास का वर्तमान' के बारे में *xxvii*

विचार-खण्ड

कहीं हम लीक तो नहीं पीट रहे 41
–नामवर सिंह
परिवर्तन की आहटों को लक्षित करें 44
–केदारनाथ सिंह
देश-कालबद्ध मनुष्य की कथा 48
–मैनेजर पाण्डेय
उपन्यास की अपनी नैतिकता 53
–अशोक वाजपेयी
भारत का मूल प्रश्न क्या है 57
–गंगाप्रसाद विमल
वर्तमान का कोण साहित्यिक प्रक्रिया के केंद्र में होता है 68
–अजय तिवारी

आलोचना-खण्ड

1857 का मिथकभेदन बजरिये पाहीघर (पाहीघर–कमलाकांत त्रिपाठी) 77
–वीरेन्द्र यादव
विकास का सवाल और विस्थापन की व्यथा (डूब-वीरेन्द्र जैन) 83
–मनीष कुमार शुक्ल
हृदय और बुद्धि के बीच इतिहास और समाज (दिलोदानिश-कृष्णा सोबती) 95
–प्रदीप सक्सेना

Scanned by CamScanner

परिवार और पितृसत्ता की दहलीज़ उलांघती औरत (दिलोदानिश–कृष्णा सोबती) 110
–विभावरी
स्त्री-आकांक्षाओं का चाँद (मुझे चाँद चाहिए–सुरेन्द्र वर्मा) 119
–प्रज्ञा पाठक
स्त्री-विमर्श के आईने में 'छिन्नमस्ता' (छिन्नमस्ता–प्रभा खेतान) 129
–कृष्णा सिंह
फोड़ों की तरह टीसते हैं अनुभव (कठगुलाब–मृदुला गर्ग) 138
–विपुल कुमार
अन्याय और असमानता के दर्शन के खिलाफ स्व की स्थापना (छप्पर–जयप्रकाश कर्दम) 147
–नीलाम्बुज सिंह
स्त्री विमर्श का उत्तर आधुनिक चेहरा (चाक–मैत्रेयी पुष्पा) 153
–अमरनाथ
जीवित आँख से मृत्यु नहीं जीवन दिखता है (दीवार में एक खिड़की रहती थी–विनोद कुमार शुक्ल) 164
–निशान्त
मिज़ो समाज का स्वप्न, संघर्ष और राग (जहाँ बाँस फूलते हैं–श्रीप्रकाश मिश्र) 173
–अमिष वर्मा
हम किसकी निगाह से देख रहे हैं (कलिकथा वाया बाइपास–अलका सरावगी) 184
–सुधा सिंह
भूदान आंदोलन की पाखंड कथा (बिस्रामपुर का सन्त–श्रीलाल शुक्ल) 189
–चंदन कुमार
मोहनदास महात्मा गाँधी कैसे बना (पहला गिरमिटिया–गिरिराज किशोर) 198
–विद्याशंकर सिंह
मृत्युबोध की रचना होते हुए भी मनहूस नहीं है 'अंतिम अरण्य' (अंतिम अरण्य–निर्मल वर्मा) 209
–निर्मला जैन
कितने पाकिस्तान में कितने हिन्दुस्तान (कितने पाकिस्तान–कमलेश्वर) 213
–डॉ. रणजीत साहा
एक के बाद एक पाकिस्तान बनने की प्रक्रिया का विरोध (कितने पाकिस्तान–कमलेश्वर) 220
–संदीप कुमार रंजन

Scanned by CamScanner

स्त्री-नियति बनाम स्त्री-अस्मिता (आवाँ–चित्रा मुद्‌गल) 227
–मीनाक्षी
आधुनिकता के दौर में व्यक्ति की सामाजिकता का आख्यान 235
(समय सरगम–कृष्णा सोबती)
–अंजूलता
'क्याप' में उत्तर आधुनिक राजनीतिक-विमर्श 244
(क्याप–मनोहरश्याम जोशी)
–जितेन्द्र कुमार सिंह
आधुनिकता का दबाव और काशी की परम्परा 252
(काशी का अस्सी–काशीनाथ सिंह)
–मनीष तोमर
बाबरी मस्जिद ध्वंस का गुनाह किस पर है 258
(आखिरी कलाम–दूधनाथ सिंह)
–रविभूषण
साधारण से असाधारण की कथा : सूत्रधार (सूत्रधार–संजीव) 276
–मीनाक्षी श्रीवास्तव
विमर्शों में कुलबुलाता एक आख्यान (सूत्रधार–संजीव) 287
–राधेश्याम सिंह
उपन्यास की शक्ल में उपनिवेशवाद विरोधी विमर्श 294
(इन्हीं हथियारों से–अमरकान्त)
–गोपाल प्रधान
भारत में इस्लामी अलगाववाद का राष्ट्रवादी (गाँधीवादी) प्रत्याख्यान 314
(बशारत मंजिल–मंजूर एहतेशाम)
–विवेकानन्द उपाध्याय
समय के यथार्थ को उकेरने वाला उपन्यास (तर्पण–शिवमूर्ति) 327
–अरुण होता
जीवन के विविध रंगों का कोलाज (कैसी आगी लगाई–असग़र वजाहत) 336
–वंशीधर उपाध्याय
तर्क और युक्ति के दिन नहीं हैं ये... (मैं बोरिशाइल्ला–महुआ माजी) 344
–दीपशिखा सिंह
आत्मा पर फफूँद के इलाके से टकराते हुए 351
(सेज पर संस्कृत–मधु कांकरिया)
–चंद्रकला त्रिपाठी

Scanned by CamScanner

आधुनिकता के दौर में व्यक्ति की सामाजिकता का आख्यान

(समय सरगम–कृष्णा सोबती)

–अंजूलता

आधुनिकता की विचारधारा साहित्य के माध्यम से हाशिये के समाज को मुख्यधारा में लाने का दावा करती रही है। जो लक्ष्य निर्धारित किए गए थे वे तो पूरे नहीं हो सके, लेकिन पिछली सदी में हाशिये के समाज का चेहरा जरूर बदला है, उनकी दावेदारी पहले से मजबूत हुई है। जिस स्त्री शिक्षा की वात नवजागरण के अग्रदूतों ने की थी उसका परिणाम आजादी के बाद दिखाई देने लगा। आजादी के बाद हिंदी साहित्य में कई लेखिकाओं का आगमन इसका प्रमाण है। कृष्णा सोबती इसी समय की एक प्रमुख लेखिका के रूप में जानी जाती हैं। 1947 के पहले, जब राजनैतिक आजादी नहीं थी तब भी कई भारतीय रचनाकार अपने समय के अंतर्विरोधों को स्पष्ट रूप से देख रहे थे, उसके बाद नई कहानी आंदोलन के दौर में लिखी गई आरंभिक कहानियों में परिवर्तित समय की संवेदना और भी साफ दृष्टिगोचर होती है। समय के साथ बदलती पारिवारिक संरचना के बीच बड़े-बूढ़ों के प्रति बदलने वाले व्यवहार को बहुत सारी कहानियों में प्रदर्शित किया गया है। खासतौर से 'वापसी' कहानी में, जिसे नई कहानी आंदोलन की पहली कहानी के रूप में भी जाना जाता है। बाद में चलकर कथा साहित्य के क्षेत्र में जितने भी आंदोलन हुए उन सब में लगातार अस्मिता के प्रश्न मजबूत होते गये। इसका प्रमुख कारण यह है कि लंबे समय से हमारे समाज में ऐसी विचारधारा विकसित होती रही जिसमें व्यक्ति विशेष के अनुभव को समाज विशेष का अनुभव बनाकर पेश किया जाता रहा। साहित्य ने भी भोगने को ही कल्पना का स्थानापन्न मान लिया। इस दृष्टि से देखा जाए तो 'समय सरगम' बहुत बाद का उपन्यास है। अपने समय के हिसाब से इस उपन्यास में भोगने और

Scanned by CamScanner